खेमराज खनाल

ई—मेल-kalampremi09@gmail.com

पोते की जिद

"दादाजी, आइए न हमारे मकान मे ।" पोते ने अंगूठा पकड़कर खींचा ।

"चलिए, दो–चार दिन हमारे घर में भी ठहरिए ।" बड़ा बेटा बोला।

बूढ़ा बाप छोटे बेटे के यहाँ बैठे-बैठे बोर हो रहा था। बड़े बेटे के मकान में बाथरूम सुविधाजनक था। बालकोनी में सूरज की रोशनी भी आती थी। पोता दादाजी का अँगूठा पकड़कर लाड़-प्यार से चल रहा था। बहू को यह सब ठीक नहीं लग रहा था। पहले बच्चा रोज–रोज माँ से झगड़ता रहता, अब दादाजी के साथ खेल रहा था। बहू को कुछ आराम ही मिला था। ससुर को पालना न पड़े, इस विषय को लेकर झिझक भी रही थी। पोता दादाजी के साथ खुश था। दादा भी पोते को लेकर खुश थे। वे पोते को दो-चार अक्षर पढ़ाने भी लगे थे। पोते ने कहा, "दादाजी, अब हमारे यहाँ ही ठहरिए ना ।"

दादा बोले, "देख लाडले, तेरे माँ-बाप क्या कहेंगे ?"

पोता अन्दर गया और कहा, "माँ, अब दादाजी हमारे मकान मे ही रहेंगे। यहीं रख लीजिए ना।"

बहू बोली, "कहाँ ठहरेंगे यहाँ? कल ही चाचा के मकान में जाने लगेंगे।"

बेटा बोला, "हमारा लड़का दादा के साथ मर मिटता है। दो-चार अक्षर सीख भी रहा है। अब यहीं ठहरेंगे पापा।"

बहू को भी कुछ आराम मिल ही रहा था; पर बोली, "जो चाहें करें । आप के ही बाप हैं।"

हिन्दी अनुवाद : किशन पौडेल

पिण्डेश्वर कैम्पस, धरान, नेपाल के प्राध्यापक डा. खेमराज खनाल सन् १९९६ से लघुकथा-लेखन में हैं । वे लघुकथा सर्जक तथा विश्लेषक दोनों हैं । उनके दो लघुकथा संग्रह प्रकाशित हैं । 'पोते की जिद' शीर्षक यह उनकी नई रचना है